International Journal of Pedagogy, Health and Management research

Volume 2 Issue 1
June. 2026

e - ISSN - 3107-8389

Page No. 1 - 3

DOI 10.5281/zenodo.21265793.

भारत के पुनरुत्थान की वैचारिक आधारभूमि: विविध संदर्भों में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

Author- डॉ. रश्मि चतुर्वेदी,*

Affiliation -
सहायक प्राध्यापक,
अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय,
भोपाल मध्य प्रदेश

Contact No.- +9425667550
Email Address-
drrashmichaturvedi1@ gmail.com

Received on 19/04/2026
Accepted on 29/04/2026
Published on 30/06/2026

Key Words - भारत का पुनरुत्थान, वैचारिक आधारभूमि, भारतीय संस्कृति, शिक्षा, विकास मॉडल, आध्यात्मिकता

ABSTRACT

भारत का पुनरुत्थान केवल आर्थिक प्रगति का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह एक व्यापक वैचारिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक प्रक्रिया है, जो राष्ट्र की आत्मा, परंपरा एवं आधुनिकता के समन्वय पर आधारित है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य भारत के पुनरुत्थान की वैचारिक आधारभूमि का विभिन्न संदर्भों—विशेषकर सांस्कृतिक, सामाजिक, शैक्षिक एवं विकासात्मक आयामों—में विश्लेषण करना है।

अध्ययन में गुणात्मक (Qualitative) एवं विश्लेषणात्मक (Analytical) पद्धति का प्रयोग किया गया है, जिसमें प्रासंगिक साहित्य, दार्शनिक विचारधाराओं एवं समकालीन नीतिगत दस्तावेजों का अध्ययन सम्मिलित है। विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि भारत के पुनरुत्थान की जड़ें उसकी प्राचीन ज्ञान परंपरा, आध्यात्मिक दृष्टिकोण, समावेशी संस्कृति एवं नैतिक मूल्यों में निहित हैं। साथ ही, आधुनिक विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार के समुचित समन्वय से यह प्रक्रिया और सुदृढ़ हो सकती है।

अध्ययन में यह भी पाया गया कि पश्चिमी विकास मॉडल की सीमाओं के संदर्भ में भारतीय दृष्टिकोण अधिक संतुलित, मानव-केंद्रित एवं सतत विकास की ओर उन्मुख है। शिक्षा, विशेषकर मूल्य-आधारित एवं समावेशी शिक्षा, इस पुनरुत्थान की केंद्रीय धुरी के रूप में उभरकर सामने आती है।

समग्र रूप से, यह अध्ययन निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि भारत का पुनरुत्थान एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसके लिए वैचारिक स्पष्टता, सांस्कृतिक आत्मबोध तथा आधुनिक नवाचारों का संतुलित समावेश आवश्यक है। यह अध्ययन नीति-निर्माताओं, शिक्षाविदों एवं शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी दिशा प्रदान करता है।

1. भूमिका (Introduction)

भारत एक प्राचीन सभ्यता होने के साथ-साथ एक जीवंत सांस्कृतिक राष्ट्र है, जिसकी पहचान केवल ऐतिहासिक गौरव से नहीं, बल्कि उसकी निरंतर विकसित होती वैचारिक परंपरा से भी होती है। वर्तमान वैश्विक संदर्भ में "पुनरुत्थान" का अर्थ केवल आर्थिक विकास या वैश्विक प्रतिस्पर्धा में स्थान प्राप्त करना नहीं है, बल्कि यह एक व्यापक सामाजिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक जागरण की प्रक्रिया है।

भारत का पुनरुत्थान उस स्थिति को दर्शाता है जिसमें राष्ट्र अपनी मूल पहचान, सांस्कृतिक जड़ों और वैचारिक शक्ति को पुनः स्थापित करते हुए आधुनिक युग की आवश्यकताओं के साथ सामंजस्य स्थापित करता है। औपनिवेशिक काल के प्रभाव, पश्चिमी शिक्षा प्रणाली और उपभोक्तावादी प्रवृत्तियों ने भारतीय समाज की मूल संरचना को प्रभावित किया, जिससे सांस्कृतिक विच्छेदन और मूल्य संकट उत्पन्न हुआ। ऐसे में पुनरुत्थान की अवधारणा एक वैचारिक पुनर्संरचना का संकेत देती है, जिसमें भारतीय ज्ञान परंपरा, आध्यात्मिकता, नैतिकता और समावेशिता को पुनः केंद्र में लाने की आवश्यकता है। यह अध्ययन इसी संदर्भ में भारत के पुनरुत्थान की वैचारिक आधारभूमि का विश्लेषण करता है।

2. भारतीय पुनरुत्थान की वैचारिक आधारभूमि

भारत के पुनरुत्थान की वैचारिक नींव उसकी प्राचीन ज्ञान परंपरा और दार्शनिक दृष्टिकोण में निहित है। वेद, उपनिषद, गीता, बौद्ध एवं जैन दर्शन ने भारतीय समाज को एक गहन नैतिक और आध्यात्मिक आधार प्रदान किया है। इन ग्रंथों में जीवन को केवल भौतिक दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि आत्मिक उन्नति और समग्र विकास के रूप में देखा गया है।

भारतीय विचारधारा "वसुधैव कुटुम्बकम्" और "सर्वे भवन्तु सुखिनः" जैसे सिद्धांतों पर आधारित है, जो वैश्विक एकता और सार्वभौमिक कल्याण का संदेश देते हैं। यह दृष्टिकोण वर्तमान वैश्विक संकटों–जैसे पर्यावरणीय असंतुलन, सामाजिक असमानता और नैतिक पतन–के समाधान के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।

इसके अतिरिक्त, स्वामी विवेकानंद, श्री अरविंद और डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जैसे विचारकों ने भारतीय पुनरुत्थान को आत्मबल, शिक्षा और नैतिकता से जोड़ा है। उनके अनुसार, भारत का पुनरुत्थान तभी संभव है जब राष्ट्र अपनी आत्मा को पहचानकर उसे आधुनिक संदर्भ में पुनः स्थापित करे।

3. सांस्कृतिक एवं सामाजिक संदर्भ

भारतीय संस्कृति अपनी विविधता और समावेशिता के लिए जानी जाती है। विभिन्न भाषाएँ, धर्म, परंपराएँ और जीवनशैलियाँ होने के बावजूद भारत में एकता का भाव विद्यमान है। यह सांस्कृतिक विविधता भारत की शक्ति है, जो उसे वैश्विक स्तर पर एक विशिष्ट पहचान प्रदान करती है।

सामाजिक संदर्भ में भारतीय समाज सह-अस्तित्व, सहिष्णुता और सामूहिक जीवन के सिद्धांतों पर आधारित रहा है। परिवार प्रणाली, गुरु-शिष्य परंपरा और सामुदायिक जीवन ने सामाजिक स्थिरता को बनाए रखा है।

हालाँकि, आधुनिकता और वैश्वीकरण के प्रभाव से इन मूल्यों में परिवर्तन देखने को मिला है। उपभोक्तावाद और व्यक्तिवाद ने सामाजिक संरचना को प्रभावित किया है। ऐसे में भारतीय पुनरुत्थान का अर्थ इन मूल्यों का पुनः सुदृढ़ीकरण है, ताकि समाज में संतुलन और सामंजस्य बना रहे।

4. शैक्षिक परिप्रेक्ष्य

शिक्षा भारत के पुनरुत्थान की केंद्रीय धुरी है। प्राचीन भारत में शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं थी, बल्कि यह जीवन निर्माण की प्रक्रिया थी। गुरुकुल प्रणाली में नैतिकता, अनुशासन और समग्र विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता था।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में जहाँ ज्ञान का विस्तार हुआ है, वहीं मूल्य-आधारित शिक्षा का ह्रास भी हुआ है। इस संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक महत्वपूर्ण पहल है, जो भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा के समन्वय पर बल देती है।

शिक्षा के माध्यम से ही राष्ट्रीय चेतना, नवाचार और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास किया जा सकता है। अतः शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में भी मूल्य-आधारित और तकनीकी दक्षता दोनों का संतुलन आवश्यक है।

5. विकास मॉडल: भारतीय बनाम पाश्चात्य दृष्टिकोण

पाश्चात्य विकास मॉडल मुख्यतः औद्योगिकीकरण, उपभोक्तावाद और आर्थिक वृद्धि पर आधारित है। यह मॉडल भौतिक प्रगति को प्राथमिकता देता है, जिसके परिणामस्वरूप

पर्यावरणीय असंतुलन और सामाजिक असमानता जैसी समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं।

इसके विपरीत, भारतीय विकास दृष्टि संतुलित और समग्र विकास पर आधारित है। इसमें आर्थिक प्रगति के साथ-साथ सामाजिक न्याय, पर्यावरण संरक्षण और आध्यात्मिक उन्नति को भी महत्व दिया जाता है।

तालिका 5.1 : भारतीय एवं पाश्चात्य विकास मॉडल की तुलना

आयाम	पाश्चात्य मॉडल	भारतीय मॉडल
आधार	भौतिकवाद	आध्यात्मिकता
लक्ष्य	आर्थिक वृद्धि	समग्र विकास
प्रकृति संबंध	शोषण	संतुलन
समाज दृष्टि	व्यक्तिवाद	सामूहिकता

6. समकालीन चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

भारत के पुनरुत्थान के मार्ग में कई चुनौतियाँ हैं, जैसे डिजिटल विभाजन, सांस्कृतिक क्षरण, नैतिक पतन और शिक्षा में असमानता। वैश्वीकरण के प्रभाव से स्थानीय पहचान और परंपराएँ कमजोर हो रही हैं।

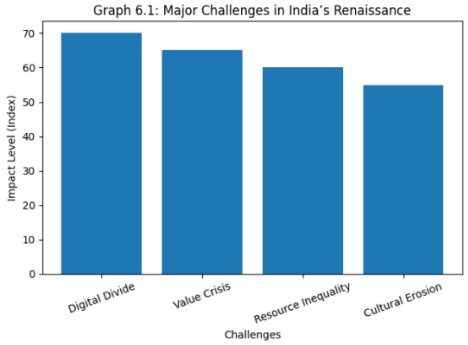

चित्र 6.1 (Graph Description):"भारत के पुनरुत्थान में प्रमुख चुनौतियाँ"

दूसरी ओर, भारत के पास युवा जनसंख्या, तकनीकी प्रगति और नीतिगत सुधार जैसे अवसर भी हैं। यदि इन संसाधनों का सही उपयोग किया जाए, तो भारत वैश्विक नेतृत्व की दिशा में अग्रसर हो सकता है।

7. निष्कर्ष (Conclusion)

भारत का पुनरुत्थान एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जो केवल आर्थिक विकास तक सीमित नहीं है। यह सांस्कृतिक, सामाजिक, शैक्षिक और नैतिक पुनर्निर्माण का समग्र प्रयास है।

भारत को अपनी वैचारिक जड़ों को सुदृढ़ करते हुए आधुनिक तकनीक और नवाचार के साथ संतुलन स्थापित करना होगा। शिक्षा, नीति और सामाजिक चेतना के माध्यम से ही यह संभव है।

8. References (APA 7th Edition)

1. Aggarwal, J. C. (2019). *Educational research*. Arya Book Depot.
2. Alam, A. (2021). AI in education. *IJET*, 8(3), 1-12.
3. Bates, A. W. (2019). *Teaching in a digital age*.
4. Brynjolfsson, E., & McAfee, A. (2017). *Machine, platform, crowd*.
5. Holmes, W. (2019). *AI in education*.
6. Kumar, R. (2023). AI in teacher education. *JET*, 20(2), 45-52.
7. Luckin, R. (2016). *Intelligence unleashed*.
8. Mangal, S. K. (2018). *Educational psychology*.
9. NEP. (2020). *National Education Policy*.
10. Popenici, S. (2017). AI in higher education.
11. Russell, S., & Norvig, P. (2021). *AI modern approach*.
12. UNESCO. (2019). *AI in education*.
13. Yadav, R. (2020). Digital transformation.